संपादकीय

शीर्षता की सूची में

भारत के प्रमुख शैक्षिक, प्रौद्योगिकी संस्थानों और विश्वविद्यालयों के लिए बेहद अच्छी खबर है। अब भारत भी शीर्षता की वैश्विक सूची में उपस्थित है। देश के 9 संस्थान शीर्ष 50 संस्थानों की जमात में शामिल हैं और 79 भारतीय विश्वविद्यालयों को भी शीर्षता के तौर पर चिह्नित किया गया है। बीते साल यह संख्या 69 थी। एक दौर ऐसा भी था, जब हमारे संस्थान और विश्वविद्यालय 500 शीर्ष की सूची में भी नहीं आते थे। उसमें भी कोई राजनीतिक और भारत को 'पिछड़े देश' के तौर पर आंकने की मानसिकता रही होगी, क्योंकि शिक्षा के क्षेत्र में भारत शीर्ष देशों की श्रेणी में रहा है। नालंदा, तक्षशिला इसके सांस्कृतिक उदाहरण रहे हैं, लेकिन वक्त के मुताबिक, शिक्षा के आयाम और क्षेत्रों में व्यापक परिवर्तन हुए हैं। आज कृत्रिम बौद्धिकता, प्रौद्योगिकी और इंजीनियरिंग का बिल्कुल परिवर्तित युग है, लिहाजा रोजगार की अपेक्षाएं भी बदली हैं। सुखद और प्रोत्साहित खबर यह है कि भारतीय विश्वविद्यालयों के 24 इंजीनियरिंग संस्थान, सोशल साइंस के 20 और प्राकृतिक विज्ञान के 19 संस्थान शीर्षता की सूची में भारत का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। यह उपलब्धि ऐसे समय हासिल हुई है, जब बहुधा रपटों और सर्वेक्षणों के निष्कर्ष सामने आ रहे थे कि भारतीय स्नातकों में कौशल, हुनरमंदी का घोर अभाव है। अब क्यूएस रैंकिंग सूची में विश्वविद्यालयों और संस्थानों के कौशल संबंधी प्रयासों का भी उल्लेख किया गया है, नतीजतन स्नातकों की नवीयता में नियोक्ताओं (एंप्लायर) की अपेक्षाओं और दृष्टिकोण में भी काफी सुधार हुआ है। प्रधानमंत्री मोदी ने भी हालिया साक्षात्कार में कहा है कि दुनिया कुछ भी कर ले, लेकिन भारत के बिना 'एआई' (कृत्रिम बौद्धिकता) अधूरी है।

हालांकि भारत सरकार में कौशल मंत्रालय का गठन प्रधानमंत्री मोदी ने स्वतंत्र रूप से किया था, लेकिन कौशल के नाम पर कुछ भाषण देना या सुनना के अलावा हम ठोस और व्यावहारिक तौर पर इसे आंदोलन नहीं बना सके हैं, लिहाजा हमारे युवा वैश्विक ही नहीं, घरेलू आधार पर भी पिछड़े हैं। बहरहाल हम शीर्षता की जमात में शामिल हो गए हैं, लेकिन क्यूएस 2025 में यह भी स्पष्ट किया गया है कि भारत ज्ञान और अर्थव्यवस्था का शीर्ष गंतव्य, गढ़ बनने में अब भी पीछे है। यह भी रेखांकित किया गया है कि भारत के संभ्रांत और विशिष्ट विश्वविद्यालयों को अपने छात्रों के सीखने के अनुभवों में सुधार की गुंजाइश बेहद जरूरी है। उसी के बाद वे वैश्विक तौर पर अपनी उपस्थिति साबित कर पाएंगे। छात्रों के सीखने के अनुभवों और उन्हें प्रशिक्षित बनाने में बेहतर शिक्षकों, निरंतर निरीक्षण और पाठ्यक्रम विकास आदि की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। सूची में शामिल विश्वविद्यालय और संस्थान क्यूएस वरीयता प्रणाली के ऐसे मानदंडों पर लगभग खरे साबित हुए हैं। हमारी शिक्षा प्रणाली में पर्याप्त प्रशिक्षित शिक्षकों और उनके काम करने की माकूल स्थितियां आज भी हमारी उच्च शिक्षा के लिए बुनियादी समस्याएं बनी हुई हैं। संस्थानों में पर्याप्त शिक्षक नहीं हैं अथवा छात्रों के अनुपात में अध्यापक बहुत कम हैं। 2023 की एक कैग रपट में खुलासा किया गया था कि आईआईटी संस्थानों में शिक्षकों की भर्ती नियमित रूप से की जाती रही है, लेकिन अब भी वे उतने नहीं हैं, जितने छात्रों के अनुपात में होने चाहिए। ऐतिहासिक कमजोरी यह है कि ऐसे शिक्षकों की संख्या को वैज्ञानिक तौर पर कभी भी तय नहीं किया गया। 2009 में मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने एक कार्यबल का गठन किया था। उसे फैकल्टी की संख्या और उनकी गुणवत्ता के मानक तय करने थे। उसके डाटा को प्रत्येक शैक्षिक संस्थान की वेबसाइट पर उपलब्ध कराना था, लेकिन कार्यबल ने जो अनुशंसाएं कीं, उन्हें आंशिक तौर पर लागू किया गया। आज शिक्षा का बजट देश के जीडीपी का उतना हिस्सा नहीं है, जितना होना चाहिए।

पंगु हो चुका डब्ल्यूटीओ, क्या यह बच पाएगा?

1990 के दशक में वैश्वीकरण के प्रतीक के रूप में डब्ल्यूटीओ का जन्म हुआ। कहा गया कि दुनिया एक गांव की तरह है, इसलिए न केवल वस्तुओं और सेवाओं बल्कि पूंजी का भी निर्बाध मुक्त प्रवाह सुनिश्चित किया जाना चाहिए, ताकि सभी देशों के लोगों को सबसे सस्ती वस्तुएं और सेवाएं उपलब्ध करा सकें। यह भी कहा गया कि पूंजी का मुक्त प्रवाह और पर्याप्त उपलब्धता विकासशील देशों में भी विकास की संभावनाओं को बेहतर बनाएगी। डब्ल्यूटीओ की खासियत यह थी कि इसके जरिए अंतरराष्ट्रीय व्यापार के संचालन को नियम-आधारित बनाया गया। यानी अगर कोई देश डब्ल्यूटीओ के समझौतों के मुताबिक व्यवहार नहीं कर रहा है, यानी डब्ल्यूटीओ के नियमों के खिलाफ विदेशों से आने वाले सामानों पर ज्यादा टैरिफ लगा रहा है या बाधाएं या अवरोध लगा रहा है, तो उस देश के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जा सकती है। हालांकि, शुरू से ही विकासशील देश डब्ल्यूटीओ के कथित लाभों को लेकर आशंकित थे, क्योंकि उन्हें लगता था कि वे टैरिफ और अन्य प्रकार की बाधाओं के माध्यम से अपने उद्योगों और कृषि को विदेशी देशों से अत्यधिक सब्सिडी वाले कृषि उत्पादों से होने वाली प्रतिस्पर्धा से ठीक से बचा नहीं पाएंगे।

इतना ही नहीं, ट्रिप्स, ट्रिम्स, सेवाओं और कृषि, खासकर स्वास्थ्य सुरक्षा, कृषि और किसानों की सुरक्षा और उनके उद्योगों की सुरक्षा से जुड़े समझौतों से होने वाले दुष्प्रभावों से अर्थव्यवस्था को बचाना अब संभव नहीं होगा। डब्ल्यूटीओ के गठन से होने वाले लाभों और उसके कारण वस्तुओं और सेवाओं की निर्बाध आवाजाही को देखते हुए अधिकांश अर्थशास्त्री नियम आधारित अंतरराष्ट्रीय व्यापार को वरदान के रूप में बताते रहे। लेकिन वैश्वीकरण के उस दौर में 'गैट' के तहत किए गए नए समझौतों से होने वाले नुकसानों का या तो ठीक से अध्ययन नहीं किया गया या फिर उन्हें नजरअंदाज कर दिया गया। लेकिन पिछले 8 वर्षों से, जब से डोनाल्ड ट्रंप ने पहली बार अमेरिका के राष्ट्रपति का पद संभाला है, तब से वैश्विक व्यापार के संचालन का एक प्रमुख साधन डब्ल्यूटीओ अपनी चमक खोता जा रहा है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अपने दूसरे कार्यकाल की शुरुआत में ही जो फैसले लिए हैं, उनसे डब्ल्यूटीओ के पतन की गति और तेज हो गई है। पूरी दुनिया में डब्ल्यूटीओ के भविष्य को लेकर चिंताएं व्यक्त की जा रही हैं। दिलचस्प बात यह है कि जो लोग डब्ल्यूटीओ को मानव कल्याण, विकास और सुचारू विश्व व्यापार का प्रतीक मानते थे, वे अब इस बात पर बहस कर रहे हैं कि डब्ल्यूटीओ कितनी जल्दी खत्म हो जाएगा। इसमें कोई संदेह नहीं है कि विश्व व्यापार संगठन अब पंगु हो चुका है। विश्व व्यापार संगठन के पंगु होने की प्रक्रिया डब्ल्यूटीओ के दोहा मंत्रिस्तरीय सम्मेलन में शुरू हुए दोहा

विकास दौर से शुरू हो गई थी। दोहा सम्मेलन में विकासशील देशों ने यह मुद्दा उठाया कि चूंकि विकसित देश आर्थिक रूप से मजबूत हैं, इसलिए असमान व्यापार के कारण विकासशील देशों में विकास प्रक्रिया बाधित होती है। इसलिए विकासशील देशों के विकास को गति देने के उद्देश्य से अंतरराष्ट्रीय व्यापार नियमों में संशोधन किए जाने की आवश्यकता है। इसके साथ ही डब्ल्यूटीओ में दोहा विकास दौर की वार्ता शुरू हो गई। विकसित देशों की इसमें कोई रुचि नहीं थी और उनकी उदासीनता के कारण दोहा विकास दौर बिना किसी निष्कर्ष के समाप्त हो गया। भारत समेत विकासशील देश डब्ल्यूटीओ में जो कुछ हो रहा था, उससे स्पष्ट रूप से निराश थे।

यही नहीं कि विकसित देश विकासशील देशों की समस्याओं के प्रति उदासीन थे, अमेरिका को यह लगने लगा था कि उसे डब्ल्यूटीओ से वह सब मिल गया है जो वह चाहता था। उनके कॉरपोरेट अब पहले से कहीं अधिक रॉयल्टी और तकनीकी शुल्क प्राप्त कर रहे हैं, क्योंकि डब्ल्यूटीओ की स्थापना के बाद बौद्धिक संपदा व्यवस्था ने ज्यादातर अमेरिका की कंपनियों को तरजीह दी, जिनके पास अधिकांश पेटेंट और अन्य बौद्धिक संपदा अधिकार थे। अमेरिकी कंपनियों को विकासशील देशों में निवेश करने के भरपूर अवसर मिले और अमेरिकी कृषि उत्पादों को विकासशील देशों में अभूतपूर्व बाजार पहुंच मिलनी शुरू हो गई। लेकिन 2001 में चीन के डब्ल्यूटीओ में प्रवेश और उसके आर्थिक उत्थान के बाद, चीनी माल ने अमेरिकी बाजारों पर कब्जा करना शुरू कर दिया और अमेरिका को चीन के साथ विदेशी व्यापार में भारी व्यापार घाटे का सामना करना पड़ा। अमेरिका ने यह अब यह शिकायत करना शुरू कर दिया कि डब्ल्यूटीओ की विवाद निपटान प्रणाली के कारण वह अन्य सदस्य देशों के साथ कई विवादों में हार रहा है। अतीत में, अमेरिका संयुक्त राष्ट्र, विश्व स्वास्थ्य संगठन, विश्व बैंक, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष और कई अन्य संगठनों सहित विभिन्न अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं को वित्तीय योगदान देता था। लेकिन, जब से डोनाल्ड ट्रंप पहली बार राष्ट्रपति बने, अमेरिका में यह धारणा बनने लगी है कि अमेरिकी करदाताओं के पैसे से इन संस्थाओं को वित्तपोषित करना अमेरिका के हित में नहीं है। अपनी रणनीति के तहत अमेरिका ने विश्व व्यापार संगठन में न्यायाधीशों की नियुक्ति की प्रक्रिया में बाधा डाली। इसके कारण विश्व व्यापार संगठन की विवाद निपटान प्रणाली ही लगभग पंगु हो गई। यह सर्वविदित है कि विवाद निपटान प्रक्रिया विश्व व्यापार संगठन की नियम-आधारित प्रणाली का अभिन्न अंग है। इसके कारण अब सदस्य देशों द्वारा विश्व व्यापार संगठन में नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करना आसान नहीं रह गया है। यह कहा जा सकता है कि अमेरिका और उसके सहयोगी देशों की उदासीनता के कारण विश्व व्यापार संगठन कमजोर होता जा रहा है। विश्व व्यापार संगठन के लगातार मंत्रिस्तरीय सम्मेलनों में यह बात स्पष्ट होती रही है कि अमेरिका की विश्व व्यापार संगठन में कोई रुचि नहीं रह गई है। लेकिन ऐसे समय में जब चीन को छोड़कर शेष विश्व समेत विकासशील देश अपने बाजारों में चीनी उत्पादों की भरमार के कारण न केवल औद्योगिक विकास के मामले में नुकसान उठा रहे हैं, बल्कि मुक्त व्यापार और वैश्वीकरण के नाम पर जन स्वास्थ्य और अंतरराष्ट्रीय व्यापार के लिए कानून बनाने की अपनी स्वतंत्रता या संप्रभुता भी खो चुके हैं और विश्व व्यापार संगठन उनके लिए विश्व बाजारों तक पहुंच का एकमात्र साधन बचा है, ऐसे में वे विश्व व्यापार संगठन के सम्मेलनों में इसे प्रभावी बनाने के लिए लगातार काम करते रहे हैं। लेकिन अमेरिका में डोनाल्ड ट्रंप के सत्ता में वापस आने के बाद अब विश्व व्यापार संगठन का अस्तित्व ही खतरे में पड़ गया है। राष्ट्रपति का पद संभालने के बाद डोनाल्ड ट्रंप ने वैश्विक मुक्त व्यापार व्यवस्था पर सीधा हमला करना शुरू कर दिया है। वही अमेरिका, जो विश्व व्यापार संगठन की बातचीत और गठन में सबसे आगे था, और दुनिया भर में मुक्त व्यापार का सबसे बड़ा पैरोकार था, अब संरक्षणवाद की वकालत कर रहा है, और तर्क देते हुए कि चूंकि दुनिया के अन्य देश उच्च टैरिफ लगाते हैं, इसलिए अमेरिका भी उच्च आयात शुल्क लगाएगा, जिसे वह 'पारस्परिक टैरिफ' कहता है। इस टैरिफ युद्ध की घोषणा के साथ, विश्व व्यापार संगठन की प्रासंगिकता खत्म होती जा रही है। यहां यह उल्लेख करना महत्वपूर्ण है कि विश्व व्यापार संगठन के गठन के समय भारत और अन्य विकासशील देशों को यह छूट दी गई थी कि भले ही विकसित देश टैरिफ कम कर दें, फिर भी वे उच्च आयात शुल्क रख सकते हैं। भारत के लिए औसत बाध्य टैरिफ (डब्ल्यूटीओ नियमों के तहत लगाए जाने की अनुमति वाला टैरिफ) 50.8 प्रतिशत है। इसके बावजूद 2006 से भारत वास्तव में केवल 6 प्रतिशत का भारित औसत आयात शुल्क लगा रहा है।

-डा. अश्वनी महाजन

सूचना

दैनिक सच एक्सप्रेस में प्रदेशभर के 42 जिला प्रतिनिधि व 200 से अधिक तहसील और विकासखण्ड प्रतिनिधि सेवाएं दे रहे हैं। लगभग यह सभी किसी अन्य न्यूज एजेंसी या सोशल मीडिया से भी जुड़े हुए हैं। अखबार के अलावा किसी अन्य प्लेटफार्म पर इनकी टिप्पणी या समाचार को दैनिक सच एक्सप्रेस से जोड़कर न देखा जाए।

प्रबंध सम्पादक

आओ मिलकर झूमो नाचो गाओ रंगपंचमी पर प्रेम के रंग लगाओ

जीवन समाधान

महाराज वैभव भटेले
(एम्. अध्यात्म एवं राष्ट्रीयता के ओजस्वी वक्ता)
Mobile No.
9303139229

भारतीय सनातन संस्कृति उत्सव और आनंद की संस्कृति है। इसमें आए दिन तीज त्यौहार हमें एकदूसरे से मिलाते हैं आपस में प्रेम जगाते हैं। कभी भगवान की भजन भक्ति कराते हैं तो कभी हमें गीत संगीत की धुन पर नचाते हैं। अभी चल रहे होली के इस उत्सव का तो अर्थ ही नाचने गाने और धूम मचाने का है। इसलिए आओ मिलकर झूमो नाचो गाओ, रंगपंचमी पर प्रेम के रंग लगाओ! फाल्गुन पूर्णिमा पर होलिका दहन के बाद चैतदिवसीय रंगोत्सव रंगपंचमी पर हमें रंगो में सराबोर कर देता है। जिसने कभी कुछ नहीं गाया उसे गाने को मजबूर कर देता है। जो कभी नहीं नाचा उसे नाचने गाने और एकदूसरे पर रंग उड़ाने के साथ रंग और भंग की मस्ती में चूर कर देता है। जब होती है रंगों की बरसात मिट जाता है बैर और सब हो जाते हैं एकदूसरे के साथ। मस्तक पर तिलक लगाने और रंग बरसाने का अर्थ यह है कि हम एक दूसरे के लिए खुशियाँ लेकर आए हैं। शुभकामनाओं के रूप में इंद्रधनुषी रंग उड़ाये हैं। होली मिलन का अर्थ यही है कि हम तुम्हारे लिए शुभकामना रखते हैं और तुम हमारे लिए शुभकामना रखते हो। होली मिलन अर्थात जीवन में एकदूसरे के सुख दुख में हमेशा साथ खड़े होने का मजबूत संकल्प। होली के उड़ते रंग हमें समर्पण व्यक्त करने का संदेश देते हैं। जैसे जल में जो रंग मिलाओ जल उसी रंग का हो जाता है इसी तरह जीवन में जैसी संगत हो आदमी वैसा बन जाता है। लेकिन ये रंग तो रंग है जिनमें आशा है उत्सव है और उमंग है। ये रंग यही दर्शाते हैं कि कोई हो अथवा न हो लेकिन आदमी तो आदमी के संग है। इसी भाव के साथ आओ खेले ब्रज की होली बन जाएं एकदूसरे के हमजोली। जिस तरह श्री राधेकृष्ण ने खेली गोप ग्वालों संग बरसाने की होली। आपस में बाँटों पकवान। बना लो हुरियारों की टोली बाजे मृदंग और नगाड़े। सबके थिरके पाँव कोई न रहा ठाड़े। भंग के रंग में सब मस्ती में झूमते नाचते गाते। आपस में मस्ताते जैसे मल्ल भिड़ते अखाड़े।

सच वाणी

सभी आलेख लेखकों के अपने विचार हैं। दैनिक सच एक्सप्रेस सभी विषयों पर तटस्थ था, है और रहेगा।

रंग पंचमी का त्योहार देवी-देवताओं की होली

सनातन धर्म में रंग पंचमी का त्योहार होली के पांचवें दिन यानी चैत्र कृष्ण पंचमी को मनाया जाता है। इस साल रंग पंचमी का पर्व 19 मार्च को मनाया जाएगा। जैसे कार्तिक पूर्णिमा को देवताओं की दीपावली होती है उसी प्रकार रंग पंचमी का त्योहार देवी-देवताओं की होली होती है। रंग पंचमी पूरे देश में बड़ी धूमधाम से मनाई जाती है। इसे कृष्ण पंचमी के नाम से भी जाना जाता है। क्योंकि यह चैत्र माह के कृष्ण पक्ष के पांचवें दिन मनाया जाता है। इसके अलावा रंगपंचमी को श्रीपंचमी और देव पंचमी के नाम से भी जाना जाता है।

रंगपंचमी की पूजाविधि- इस दिन सुबह स्नान करने के बाद व्रत-पूजा का संकल्प लें और घर के पूर्व, उत्तर-पूर्व या उत्तर में एक लकड़ी के पाटे पर पीले रंग का साफ़ कपड़ा बिछाकर उस पर राधा-कृष्ण की तस्वीर या प्रतिमा स्थापित करें। पास में जल से भरा कलश और पूजा की थाली रख लें। कलश पर स्वस्तिक का चिह्न बनाएं और इसके ऊपर मौली बांधें। इसके बाद तस्वीर पर जल के छींटे लगाकर कुमकुम से तिलक लगाकर चावल चढ़ाएं राधा-कृष्ण को ताज़े व सुगंधित फूलों की पहनाएं। राधा-कृष्ण के सामने शुद्ध घी का दीपक जलाएं। अब भगवान पर फूल, अबीर, गुलाल चढ़ाते रहें और स्वयं के मस्तक पर भी गुलाल का तिलक लगा लें। हो सके तो थोड़ा गुलाल आसमान में भी उड़ाएं। गाय के दूध से बनी खीर का भोग लगाएं। आसन पर बैठकर श्रीं श्रीये नम: मंत्र का जाप कम से कम 1 माला (108 बार) कमलगट्टे की माला से करें। कलश में रखे जल को घर के हर कोने में छिड़कें। ऐसा करने से घर की नकारात्मक ऊर्जा समाप्त होती है और घर में सुख-समृद्धि बनी रहेगी। अंत में भगवान राधा-कृष्ण की आरती करें और खीर का का प्रसाद परिवार के लोगों में बांट दें। ऐसा करने से राधा-कृष्ण की कृपा से आपकी हर कामना पूरी होगी।

रंगपंचमी का पौराणिक महत्व - शास्त्रों के अनुसार रंगपंचमी को अनिष्टकारी शक्तियों पर विजय पाने का पर्व कहा जाता है। माना जाता है कि त्रेता युग की शुरुआत में ही भगवान विष्णु ने धूलि वंदन किया, इसका मतलब ये कि उस समय भगवान विष्णु ने अलग-अलग रंगों के प्रयोग से तेज युक्त अवतार लिए। त्रेता युग में अवतार होने पर उसे तेजोमय यानी अलग-अलग रंगों की मदद से शरीर के अनुरूप बनाया। इसलिए मान्यता है कि अलग-अलग रंगों को हवा में उड़ाना धूलि वंदन होता है और उन रंगों की देवीय चमक से भगवान प्रसन्न होते हैं।

महाराष्ट्र में रंगपंचमी - रंगवाली होली यानि धुलंडी से लेकर पंचमी तिथि तक महाराष्ट्र में जमकर होली खेली जाती है। रंगों के इस पांच दिनों के महोत्सव का आखिरी दिन रंगपंचमी होता है। इस दिन देवी-देवताओं की विशेष पूजा की जाती है। पकवान बनाकर भगवान को उनका भोग लगाया जाता है। इस दिन विशेष प्रकार का मीठा पकवान भी घरों में बनाया जाता है जिसे पूरनपोली कहा जाता है। लोग अपने परिवार वालों और रिश्तेदारों के साथ ये त्योहार मनाते हैं।

प्राचीनकाल से ही होती है रंगपंचमी- इस पर्व का इतिहास काफी पुराना है। कहा जाता है कि प्राचीन समय में जब होली का उत्सव कई दिनों तक मनाया जाता था उस समय रंगपंचमी के साथ उसकी समाप्ति होती थी और उसके बाद कोई रंग नहीं खेलता था। वास्तव में रंगपंचमी होली का ही एक रूप है जो चैत्र मास की कृष्ण पंचमी को मनाया जाता है। होली का आरंभ फाल्गुन माह के साथ हो जाता है और फाल्गुन पूर्णिमा को होलिका दहन के बाद यह उत्सव चैत्र मास की कृष्ण प्रतिपदा से लेकर रंगपंचमी तक चलता है। देश के कई हिस्सों में इस अवसर पर धार्मिक और सांकृतिक उत्सव आयोजित किये जाते हैं। शास्त्रों के अनुसार रंगपंचमी अनिष्टकारी शक्तियों पर विजय पाने का पर्व कहा जाता है।

रंगपंचमी पर करें सात प्रकार के अनाज का दान- धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण होता है क्योंकि इस दिन पॉजिटिव एनर्जी और भगवान की कृपा प्राप्त करने के लिए विशेष उपाय किए जाते हैं। रंग पंचमी के यह उपाय बहुत ही कारगर है। साथ ही यह उपाय करने में भी बहुत आसान हैं। आगे हम आपको आपके जीवन के अलग-अलग पहलुओं को बेहतर बनाने के लिए रंग पंचमी के उपाय बताने जा रहे हैं जो कि इस प्रकार हैं-

राधा-कृष्ण की पूजा करें- यदि आप अपने जीवन में समृद्धि को आकर्षित करना चाहते हैं तो रंगपंचमी के दिन राधा कृष्ण की पूजा करें। ऐसा करने से राधा कृष्ण प्रसन्न होते हैं और आर्थिक समृद्धि आती है। राधा-कृष्ण की मूर्ति को गुलाल अर्पित करें और सुख-समृद्धि की प्रार्थना करें।

गाय को हरा चारा खिलाएं- शास्त्रों के अनुसार, गाय को भोजन कराना सबसे बड़ा पुण्य माना जाता है। इसलिए रंग पंचमी पूजन गाय को हरा चारा खिलाएं साथ ही गुड़ और आटा खिलाने से धन संबंधी समस्याएं दूर होती हैं।

पीले कपड़े में हल्दी और सिक्का बांधकर रखें-अगर आप चाहते हैं कि आपके घर में कभी पैसों की कमी न हो, तो रंगपंचमी पर पीले कपड़े में हल्दी और एक सिक्का बांधकर घर के मंदिर में रखें और माता लक्ष्मी के मंत्र का जाप करें।

सात प्रकार के अनाज का दान- रंग पंचमी के दिन घर में समृद्धि लाने के लिए आप दान भी कर सकते हैं। इस दिन अनाज का दान करना शुभ माना जाता है। रंग पंचमी के दिन आप सात प्रकार के अनाज गेहूं चावल जो मक्का मूंग और उड़द आदि का दान कर सकते हैं। करने से कष्टों से मुक्ति मिलती है और आर्थिक समृद्धि आती है।

मुख्य द्वार पर गुलाल और दीपक- रंगपंचमी के दिन घर के मुख्य द्वार पर लाल गुलाल छिड़कें और शाम को सरसों के तेल का दिया जलाएं। यह तरीका आपके घर से नकारात्मक ऊर्जा को हटाने और आपके जीवन में गुड लक लाने में मदद करता है।

काले तिल और पानी का उपाय- रंग पंचमी के दिन अपने घर से नखरा में ऊर्जा को मिटाने के लिए आप काले तिल और पानी का उपाय भी कर सकते हैं। इसके लिए एक कटोरी पानी में काले तिल डालकर घर के चारों कोनों में छिड़कें। यह उपाय नकारात्मक एनर्जी के लिए बहुत असरदार है।

नमक और पानी से घर की सफाई करें- जैसा कि हम जानते हैं कि नमक शुद्धिकरण के लिए बहुत ही कारगर है। इसलिए रंग पंचमी के दिन आप अपने घर में नकारात्मकता हटाने के लिए नमक और पानी से घर की सफाई कर सकते हैं। रंगपंचमी पर नमक का पानी से सफाई करने से घर की नकारात्मक ऊर्जा समाप्त होती है। इसके लिए एक बाल्टी पानी में नमक मिलाएं और घर में पोंछा लगाएं।

व र्ग प हे ली 2446

ANJITA NINDANAUR Mob 08022568532

बायें से दायें:- 2) नमूना; क्षणिक दर्शन, 14) एक पौधा जिसके फल से रुई निकलती है, 4) तमगा, 18) एक दुग्धाश्मा गोलार्ध, 6) यात्रा, 7) कलाप्रकार, 21) तलस्य, 23) जनमत, 9) फैलना, 10) एक भारतीय शहर, 24) कारण, 12) बुद्धिमान, 14) डाट-बाट, 26) अकड़बाज़, ऊसर, 15) अप्रिय, 16) (उत्तर: अगले अंक में)
झपटना, 19) पाप, 20) *पिछली पहेली का उत्तर*
नस, 22) यानखत, 25) किंचकिच, 27) मुँहतोरी.

ऊपर से नीचे:- 1) लगभग, 2) कारगुजारी, 3) नमकीन, 4) शुल्क, 5) एक भारतीय शहर, 8) औरत, 11) खेलने के दिन, कम-फिसली, 12) आसान, 13)

प	र	ब	ह	■	ए	आ	■	अ	ति					
ग	■	ह	र	ला	■	सा	ड	■	■					
म	■	ह	ल	■	अ	ल	■	र	सम					
■	त	मा	■	र	■	■	■	■	■					
क	र	ल	■	सी	■	ब	■	■	■					
■	पि	■	ब	र	ल	■	■	■	■					
अ	ल	■	ग	ल	■	■	■	■	■					
■	■	■	■	■	■	■	■	■	■					
ग	■	ब	का	रा	■	गी	■	■	■					
ली	■	अ	ली	र	■	त	■	ल	क्ष्य					

दैनिक सच एक्सप्रेस पंचांग

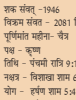

ज्योतिषाचार्य
श्रीमती सुषमा शंकरलाल पुरोहित
मो: 8823008303

बुधवार 19 बुधवार 2025
सूर्योदय-प्रात: 6:27
सूर्यास्त-शाम 6:19
चंद्रोदय -11:06
चंद्रास्त - 9:55
शक संवत् -1946
विक्रम संवत - 2081 फ़ागल
पूर्णिमांत महीना- चैत्र
पक्ष - कृष्ण
तिथि - पंचमी रात्रि 9:19 तक पश्चात् षष्ठी
नक्षत्र - विशाखा शाम 6:05 तक पश्चात् अनुराधा
योग - हर्षण शाम 5:41 तक पश्चात् वज्र
करण - कौलव दिन 11:29 तक पश्चात् तैतिल
सूर्य राशि -मीन
चंद्र राशि - तुला

शुभांक 2-7-9

मेष
मन अशांत तथा कुछ बुरे विचार मन में आ सकते हैं। मन को शांत करना आवश्यक। परिवार में अपनी बात साझा करें। शिवजी को अक्षत अर्पित करें। शुभ अंक- 2 , शुभ रंग - नीला ।

वृष
दिन उत्तम । कॉलेज स्तरीय छात्र-छात्राओं अपने सीनियर से सहयोग प्राप्त होगा। आर्थिक स्थिति बेहतर। पारिवारिक रिश्तों में मजबूती ।शिवजी को अबीर अर्पित करें। शुभ अंक- 1 , शुभ रंग - केसरी ।
.

मिथुन
अपने कार्य और विचारों में स्थिरता लाने का प्रयास रहेगा,क्षणभी हद तक उसमें सफलता भी प्राप्त होगी। कुछ लोग आपसे द्वेष पूर्ण व्यवहार कर सकते हैं । शिवजी को अबीर अर्पित करें। शुभ अंक- 2 , शुभ रंग- नीला ।

कर्क
व्यक्तित्व में सुधार ।परिवार की जिम्मेदारियों को समझने की योग्यता । पिता के साथ किसी बात पर विचार गिमर्श संभव । शिवजी को सफेद सुगंधित फूल अर्पित करें। शुभ अंक- 2 , शुभ रंग- भूरा ।

सिंह
नये शत्रु बन सकते हैं। कृषि के क्षेत्र में सफलता । व्यापारी को घाटा हो सकता है, लेकिन अस्थाई होगा। आने वाले समय में ताम्रकारी योग बनेंगे। मन स्थिर रखें । शिवजी को नीले फूल अर्पित करें। शुभ अंक- 1 , शुभ रंग- नीला ।

कन्या
आवश्यकता से अधिक किसी बारे में नहीं सोचें ,अन्यथा तनाव की स्थिति बन सकती है । किसी अपने बिल्चुल वरोज्ञ व्यक्ति के साथ मन की बात को साझा करें, बेहतर होगा । शिवजी को सफेद अर्पित करें। शुभ अंक- 7 , शुभ रंग- केसरी ।

तुला
परिवार के साथ अच्छे संबंध। घर वालों को किसी बात से समस्या हो सकती है। मित्रतूतकार रास्ता निकले। संतान बेज़ीय ताम । शिवजी को लाल गुलाब अर्पित करें। शुभ अंक - 4 , शुभ रंग- पीला ।

वृश्चिक
नौकरी के प्रयासरत जातकों नौकरी प्राप्त होने के योग। सभी आपके काम से खुश रहेंगे ।घर में किसी बात से मतभेद हो सकता है ,लेकिन समझदारी से सुलझाने का प्रयास करें । शिवजी को लाल फल अर्पित करें। शुभ अंक- 3 , शुभ रंग- पीला ।

धनु
आज छोटी मोटी समस्या बन सकती है । किसी भी विषय पर ज्यादा न सोचें । मन मस्तिष्क स्थिर रखें । शिव जी को अक्षत अर्पित करें । शुभ अंक- 1 , शुभ रंग- गुलाबी।

मकर
पुर्ठगत योजना है ,तो उस पर आज काम करें, सफलता प्राप्त होगी। परिवार में तालमेल उत्तम। शिवजी को सफेद सुगंधित फूल अर्पित करें। शुभ अंक- 1 , शुभ रंग- भूरा ।

कुंभ
किसी अनजान अच्छे व्यक्तित्व के प्रति आपका आकर्षण हो सकता है । भावनाओं में बहने से बचें । शिवजी को लाल फूल अर्पित करें। शुभ रंग- 7 , शुभ रंग- लाल ।

मीन
वैवाहिक जीवन में कुछ समस्या बन सकती है , जिससे मन व्यथित हो सकता है । रिश्तों को समझदारी से सम्हालें । शिवजी को मिश्री अर्पित करें। शुभ अंक- 6 , शुभ रंग- महरून ।

ग्रह स्थिति
सूर्य मिथुन सूर्य नक्षत्र राशि में, ता. 14 को रात्रि 9:29 से मीन राशि में। मंगल मिथुन राशि में। बुध- मीन राशि में , ता. 15 को रात्रि 10:10 से वक्री । गुरु- वृषराशि में । शुक्र- मीन राशि में, ता. 2 को रात्रिकाल 3:20 से वक्री । शनि-मीन राशि में, ता. 29 को रात्रि 8:55 से मीन राशि में । राहु-मीन राशि में। केतु-कन्या राशि में।

दिशा शूल
उत्तर दिशा में यात्रा वर्जित है। अति आवश्यक होने पर तिल से बने खाद्य पदार्थ का सेवन कर घर से निकलें।

चौघड़िया
शाम मुखर 6:00-7:30 तक
अमृत मुखर 7:30-9:00 तक
शुभ मुखर 10:30-12:00 तक
चर दोपहर 3:00-4:30 तक
लाभ अपराह्न 4:30-6:00 तक

अभिजीत मुहूर्त
आज नहीं ।

सर्वार्थ सिद्धि योग
सर्वार्थ सिद्धि योग: ता. 2 को सूर्योदय से दोपहर 12:16 तक। ता.4 को सूर्योदय से दिन 8:57 तक। ता. 5 को प्रात: 7:19 से रात्रि प्रांत तक। ता. 9 को रात्रि 2:26 से ता. 10 को रात्रि 2:36 तक। ता. 11 को सूर्योदय से रात्रि 3:14 तक। ता. 16 को सूर्योदय से दिन 10:26 तक। ता. 19 को शाम 6:05 से ता.20 को रात्रि 8:16 तक। ता . 30 को शाम 6:41 से रात्रि प्रांत तक ।

शिवयोग
शिवयोग योग - 1 को सूर्योदय से दिन 1:45 तक।
अमृत सिद्धि योग: 4 को सूर्योदय से सुबह 8:57 तक। ता.16 को सूर्योदय से सुबह 10:26 तक। ता. 19 को शाम 6:05 से रात्रि प्रांत तक ।

रवि योग
ता.7 के दिन 1:04 से ता.8 रवी दोपहर 3:27 तक। ता. 20 रवी सुबह 10:01 से ता. 21 रवी सुबह 9:28 तक। ता.22 रवी सुबह 8:41 से ता. 24 रवी सुबह 7:32 तक। ता. 25 रवी सुबह 4:42 से ता. 26 रवी सुबह 6:46 तक । ता. 28 रवी सुबह 6:48 से ता.29 रवी सुबह 8:58 तक ।

पुष्य नक्षत्र: 9 को रात्रि 2:26 से ता. 10 के रात्रि 2:36 तक।